गुरु नानक – सबद ६

साचा साहिब साच नाइ भाखिआ भाउ अपार ॥

जप, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, २

साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु ॥
आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥
फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु ॥
मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु ॥
अमृत वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ॥
करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥
नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु ॥४॥

सार: आत्म-प्रयास की कोशिश चरित्र को संवारती, मानवीय गुणों को बढ़ाती है। अगर कोई व्यक्ति किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास करता है, तो उसका फल कई गुना होकर सामने आता है।

साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु ॥
सर्वव्यापी चेतना ही सच्ची मालिक है; इसका अस्तित्व अनंत है और इसकी भाषा असीम प्रेम की है।

आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥
जो निडर होकर, निरंतर प्रेम की खोज करते हैं, उनको सर्वव्यापी चेतना के द्वारा बेअंत बख़्शीशें प्राप्त होती हैं।

फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु ॥
साधकों की ऐसी मंडली की एक झलक देखने के लिए कोई क्या कर सकता है?

मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु ॥
कोई ऐसे कौन से, क्या शब्द बोल सकता है जिनसे प्रेम हो?

अमृत वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ॥
वह पल उत्तम होता है, जब कोई व्यक्ति सच, आत्म-चिंतन, कृतज्ञता और सोच की अनंत अमृतमय स्थिति में होता है।

करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥
इन करमों से ऐसे चरित्र का निर्माण होता है जो ज्ञान के द्वार खोल देता है।

नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु ॥४॥
नानक कहते हैं कि ऐसे गुणों और आत्म-प्रयासों के माध्यम से व्यक्ति अपने सच्चे स्वरूप को समझ सकता है। (४)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि सच्चाई और प्रेम अस्तित्व की नींव हैं। जो अपने अस्तित्व की पहचान के लिए चिंतन पर ध्यान केंद्रित करते हैं वह सदा सच्चे और प्रेम के मार्ग पर रहते हैं। समूह एक्य के रूप में ये सब मिलकर साधक के लिए रूहानी रोशनी का शानदार क्षण बनाते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com